

ओम् शान्ति

सन् 1932 बाबा की डायरी से

(भक्ति मार्ग में बाबा का जो चिंतन था, गुरु में श्रद्धा थी - वह बाबा ने अपनी डायरी में अपने ही शब्दों में लिखा है तथा अपने से जो बातें की हैं उसका कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है)

मिथ्या संकल्पों को त्यागो। जो असत है। सत संकल्प क्या है?

श्री सद्गुरु का ध्यान करो। वह साक्षात् वासुदेव है। उनको कभी न भूलो। देखो जीते जी जो टाइम चला जाता है वह भी तो सपना होता चला जाता है। कई आये कई गये, सब सपना हो गया। बाकी जो सत है, आनंद है सुन्न है यानी कुछ नहीं है, शान्ति।

हे नाथ यही बैठ कर चिंतन करया जाऊं तो बेड़ा पार हो जाये। द्वेत में नहीं जाऊं पर अद्वेत में, जो मिथ्या संकल्प में चला जाता हूँ, व्यवहार में, तो भूल जाता हूँ। अब देखो क्या करूँ, यह भी तो आपका व्यवहार है। (नहीं यह तो झूठा संकल्प है) सच्चा तो अपने को जानने का संकल्प है। व्यवहार का संकल्प द्वेत का, और अपने को जानने का संकल्प अद्वेत का है। शान्ति।

जितना हो सके अद्वेत का विचार करो। अपने आपको पहचानने का संकल्प करो। असत वस्तु का फुरना छोड़ दो। सिवाए गुरुदेव के वायरलेस के संकल्प के और कुछ नहीं। उसको याद करो वह अच्छा संकल्प बतायेगा। हर वक्त उसके ध्यान में बैठकर अपने को पहचानो। यही ठीक रास्ता है। नहीं तो अपने को भूल करके हैरान हो जायेगा। जैसे होता है। खबरदार रहो। झूठा संकल्प माया का छोड़ो। सावधान हो जाओ। तू अपने को पहचान। तू तो वही सत चित आनन्द वस्तु है। तो शान्त होकर बैठ जा- अपने निज आनन्द में।

जिस तरह सतसंग में सारी दुनिया भूल जाती है। जिस तरह रात को नींद में सारा संसार देखने में नहीं आता है इसी तरह जागते हुए सब भूलो। कारोबार को कम करके सतसंग और सत शान्ति का अभ्यास करो। जिस तरह से गुरुजन ने राम पदवी पाई है, निर्माण नारायण हुए हैं तो जब दूसरा हो सकता है तो तू क्यों नहीं हो सकता। टाइम मुकर्र करके अभ्यास करो। शास्त्र पढ़ो। सुबह को सवेरे बाहर निकल बगीचे में झाड़ की छाया में बैठ अभ्यास और चिंतन करो। फिर आ करके स्नान पानी करके नाश्ता करके, गुरुदेव का ध्यान करके 12 बजे काम पर थोड़ा ध्यान दो फिर एक घण्टा आराम करके गुरुजन का व्यवहार समझ करके मुनीब होकर रहो फिर 7 बजे बाहर निकल जाओ। रात को, सवेरे ही सो जाओ और सुबह को 4 बजे उठकर ध्यान करके महिमा का वर्णन करो। सब संसारी मोह को भूलने का अभ्यास करो। तू क्या हो, विचार करके मन को वश करने का प्रयत्न करो। कोई भी पाप का काम न करो। दृष्टि को सुधार करके गुरु को हर-हर याद कर क्षमा करने के लिए हर दम विनंती करो।

ओम्

हे मन तुम ब्रह्मस्पतवार के दिन बराबर सितम्बर तारीख 20 और वर्ष 1932 को अपने आपको अर्पण किया, सतगुरु देव की दरबार में। यानी तू मर गया बिक गया। उस दिन से प्रतिज्ञा की सब कुछ जो मैं अपना समझकर बैठा था तो मेरे मरने से सत यानी ईश्वर का हो गया। परन्तु ईश्वर ने हुक्म दिया है कि यह सब अपना नहीं समझके कर्म करते रहो। ऐसा होना सम्भव है वा नहीं, वह तो ईश्वर जाने। एक बारी यह छोड़ करके 7 महीने के लिए सचमुच मर जाना चाहिए। देखें आपका यह सब कुछ चलता रहता है या नहीं जो चलता रहे तो फिर साफ हो जाना चाहिए। संकल्प, विकल्प हैरान करता है क्यों शान्त नहीं होता है। अपनी भूल है। अरे बेवकूफ समझ लो कि जो शरीर लेखराज के नाम से प्रसिद्ध था वह मर गया। यह दूसरा शरीर अभी मिला है। आगे का नाता मर जाने से सब टट जाता है। अब तो नया नाता किसके साथ जोड़ना है?

एक से, जो सत है। जो कुछ असत है वह खत्म हो जाने वाला है, उसी से नाता क्या रखना है। सत क्या है? जो नाश नहीं होता है वह क्या है? आत्मा सत, परमात्मा सत, जो सत तेरे में बोल रही है, देख रही है वह सत् आत्मा है। वह अमर है। तू भी तो सत है सत को ग्रहण करो। श्री सतगुरु देव का प्रोग्राम कौन सा है? उनकी रहन-सहन किस प्रकार की है, कोशिश करो उसी प्रोग्राम पर चलने का।

ओम् 18-12-32

ऐ मूर्ख तो सत है, असत को ग्रहण न करो। असत को छुओ नहीं। देखो गुरुदेव जी सत है, असत नजदीक ही नहीं आती। सत बोलते हैं, सत है तब तो सत बोलते हैं। सिर्फ सत ही बोलते हैं, शान्त चित खुद सत आत्मा अपने को जानकर संसार को असत समझ शान्त स्वरूप सत होकर बैठे हैं तो हम उनको ईश्वर मानते हैं। हमारे से बल्क सभी से जास्ती नामाचारी प्रसिद्ध हैं, सब कोई उनको सिर झुकाता है। किसके आगे? सत के आगे। कोई भी दुख सुख नहीं भासता। दुनिया की कोई भी ताकत दुख नहीं देती। देखो बेवकूफ तुम कितने फुरने, कितनी चिंताएं इस असत व्यवहार में रहकर भोग रहे हो। फिर तुम भी सत को ग्रहण करके असत से एकदम परे हो जाओ। जो वस्तु विनाशी है, वह असत है। उनसे दूर होकर सत को पकड़ो। ऐ मूर्ख ख्याल न करो कौन सी ऐसी वस्तु है जो असत नहीं है। सब नाशवान है। बाकी सत क्या है? अरे मूर्ख गुरुदेव के पास ऐसा कौनसा जादू है जो सभी नमन करते हैं? कोई पैसा कौड़ी या कोई माल मिलकियत देता है? किनारे होकर बैठा है। बैठ उपदेश देता है कि असत को न पकड़ो, सब नाशवान है। माया, कुटुम्ब अरे सब असत है। शरीर भी असत है, बाकी क्या। बाकी शान्त चित तुम निर्गुण रूप ईश्वर हो। अगर जो सर्गुण स्वरूप, निर्गुण रूप से धारण किया है तो भी तुम सत हो।

हे सर्गुण स्वरूप सत को ग्रहण करो। अरे जबकि सब नाशवान है फिर तुम क्यों मूझे हो? तुम्हारा तू नहीं हो, बाकी तुम्हारा क्या है? अच्छा आज तुमको लाटरी आई, धन मिला, अच्छा औलाद मिला, परन्तु तुम आज मर जाता है, फिर तुम्हारा धन कहाँ? अरे तुम अपना कुछ नहीं समझो, तुम्हारा कुछ नहीं है। सब कुछ उसी का है जो सत है। अगर तुम समझता हो कि ईश्वर बनूँ तो असत को न पकड़ो तो तुम भी गुरुदेव जैसा पूजा जाओ। तुमको भी सभी गुरुदेव कहे ऐसी चलन सत चाहिए। तुम्हारा है ही क्या? हे भूक, कुछ सोचो, प्रतिज्ञा करो, असत को न छूने की। अगर तुम्हारा शरीर भी असत, तो बाकी तुम्हारा है ही क्या? अरे भूक तुम्हारा ठिकाना कौन सा है? आज हो कल नहीं होगा। किसका इन्तजार रखकर बैठे हो। छोड़ो इन्तजार को। तुम बाकी जो हो वह सत हो। क्यों मूझ रहे हो? देखो गुरुदेव कितना शान्त बैठे हैं, क्योंकि उनका कुछ नहीं है। करके तुम्हारा आदर सत्कार पाया है। अरे तुम्हारा कुछ नहीं है, और है भी सच ऐसा तो बाकी फिर क्या रहा? असत को छोड़ो तो तुमको आदर सत्कार मिले। करके देखो, परन्तु कमजोर नहीं होना। बेईमान नहीं होना। गुरुदेव क्यों आनन्द में है? जांच करके देखो। वह अपना कुछ नहीं समझते हैं, दूसरों को भी ऐसा कहते हैं कि तुम्हारा क्या है। जो खुद अपना नहीं है तो फिर दूसरा कुछ उनका कैसे हो सकता? इसलिए अगर आनन्द प्राप्त करना है तो तुम सत होकर असत को दूर करो तो मान प्राप्त करो। बाकी जो तुम्हारे में सत है वह तो शरीर के बिगर दूसरों में भी है। वह प्यारी चीज सत लाईट की तरह चमकने वाली जो शरीर से निकल जाती है तो शरीर, बिगर चमक वाला हो जाता है क्योंकि शरीर असत है। बाकी जो चीज (आत्मा) शरीर से निकल जाती है वह सत है। सचमुच प्यार उसी को किया जाता है। वह प्यार वाली चीज सत जाकर सत में समा जाती है। जो लाईट से मिल लाईट हो जाती है। और शरीर बिगर लाईट के रह जाता है, उनको जलाया जाता है। 5 तत्वों का बना हुआ शरीर नाशवान हो जाता है।

हे भाई भला तुम इस मूझने वाली चलन को पकड़ क्यों बैठा है? देखते हो कि मन में मूझ होती है, मन चलायमान होता है जबकि तुमको इनसे भी उसमें आराम देखने में आता है। तो फिर इसको चिपक क्यों

पड़ा है। देखो तो गुरुदेव कैसे शान्त बैठे हैं, भला बताओ उन्हें को कोई चिन्ता है? आनन्द के सिवाए और क्या है? क्यों ऐ मूर्ख तुम भी इसी तरह आनन्द से शान्तचित होकर रहो। तुमको कौन सी जरूरत है, व्यवहार में रहने की। जो दिल में मूँझ डाल रोने जैसी सूरत करता है। क्यों नहीं, इस मूँझ को फेंकता। ऐ भाई शरीर का ठिकाना नहीं है। किसी भी समय बिगड़ पड़ेगा फिर चिन्ता हो पड़ेगी। शरीर कमजोर होने से मोह ममता यह चोर तुमको बहुत सतायेंगे। खास करके मोह जो माया में, कुटुम्ब में इतने वर्षों का पड़ा हुआ है वह तुमको सतायेगा। तुमको कमजोर देख तुम्हारे ऊपर वार करेगा। तुम अभी कोशिश करो एकान्त में रहने की और सत को ग्रहण करने की। कुछ नुकसान पड़ेगा वा बीमार पड़ेगा तो फिर मन दुखायेगा। उनसे तो जल्दी फेंको यह झूठा जंजाल। देखो सन्त लोग सब सुखी हैं, पेट के लिए भोजन मिलता रहता, भजन करते रहते, वे कितने न सुखी हैं। जो सभी आकर नयन झुकाते, यह कौन है? यह भी तो तुम्हारे जैसे इन्सान हैं परन्तु उन्होंने समझा है कि माया कुटुम्ब में अशान्ति है। बिगर माया, कुटुम्ब आदि के शान्ति और आनन्द है। अब तुम भी प्रतिज्ञा करो, कि कामकाज को छोड़ किनारे होकर देखो। फिर भी अगर सुख न दखो तो फिर चले आना। कमजोर होने का काम नहीं है। हे मन छोड़ो इस खिटपिट को। सिवाए शान्ति के और है ही क्या? इतनी सब मारामारी माथाकूटी किसके लिए। तुम तो सत हो अरे अपने को पहचानो। क्यों आकर इन माया के दुखों में अपने को फंसाया है। बहुत ही तुमने यह धक्के खाये। अब धक्के खाने से मुक्त हो जाओ। बेवकूफ जल्दी करो, देर न करो। आया कि आया, मौत हर वक्त सवार है। वह कोई पूछेगा वा बतायेगा थोड़ेही। अचानक से आयेगा फिर समय नहीं मिलेगा। तैयारी करते वर्ष बीत गये, तुमने अन्जाम किया था कि 42 वर्ष का होऊंगा फिर यह व्यवहार फेंक दूंगा फिर कहाँ गया वह अन्जाम। ऐ मूर्ख फंसता ही जायेगा। कोई भी व्यवहार करेगा तो मन में मूँझ चली आयेगी। क्योंकि पक्का अपने को नहीं पहचाना है। अजुन तक मैं और मेरा करता रहता है। छोड़ो, जितना जल्द छोड़ो उतना अच्छा। कुछ तो आनन्द लो।

हे गुरुदेव, कृपा करो कोई रास्ता बताओ। हे प्रभु आप तो समर्थ हो, आप कोई भी चाबी फेर सकते हो। जल्दी करो हे नाथ देर न करो। हे भाई सब देकर लेकर जिसका है करो खलास। दियो टुबकी तो उतरे मुंझारा। तुम्हारा है ही क्या? 6 मास के लिए अन्जाम करो कि मैं एकान्त में शान्तचित होकर रहूँगा। फिर देखो तो क्या होता है। सोच करो तो फालतू कितने मुंझारे आते, जिसमें मन फिसलता रहता, दिल मुरझाई रहती उनसे फायदा ही क्या? अब फेंको इस झूठ को। लो सच का रास्ता। लो प्रभु की शरणा। गुरुदेव जैसा शान्तचित होकर रहो। अन्धेरे में सभी की तरह इतने वर्ष बीत गये तुम अन्धकार में रहा। अच्छा अब जागो, एकदम जागो। जो समय रहा है बाकी वह भी ठीक है। फिर उसको न गंवाओ। बहुत गई थोड़ी रही अब भी समझ ले, थोड़ी देर के लिए शान्त चित हो जा। जब तक अपने आपको पहचान लो। पीछे दुख और मूँझ नहीं होगी शान्त हो जायेंगे। तू अपने को सम्भाला कौन है जो तुमको हैरान करता है? तू अपने को आप क्यों हैरान करता है? सोच एक बेवकूफ, शान्त कहाँ है, वहाँ जा। तेरा क्या है, तू क्यों हैरान होता है। चुप होकर बैठ। अच्छा मौन में बैठ जा। ऐसा करके देखो। कोई तुम्हारे पास नहीं आवे। बोलो मेरा कुछ नहीं, जिसका है उनसे पूछो, मैं तो मरा पड़ा हूँ, मैं कहाँ हूँ, छोड़कर इस खिटपिट को, तुम शान्त होकर बैठ जाओ। आनन्द के सिवाए और कुछ नहीं और सब कुछ भूल जा, अरे अपने को भी भूल जा। एक को याद करो। गुरुदेव जन भी बोलते हैं कि मैं एक को जानता हूँ और किसको नहीं जानता हूँ तो तुम भी एक को जानो और सबको भूल जाओ। एक क्या है? सुन्न हो जा। जीते जी मरकर सुन्न हो जा। जैसे गुरुदेव को कोई बाहर का फुरना नहीं है, सत हो गये है तुम भी सब फुरना छोड़ करके सत हो जाओ। तुम भी मर जाओ तो दुनिया आपेही मर जायेगी। तुम मर गया मानो मर गई सारी दुनिया। खेल खत्मा क्यों भटकता फिरता है? क्यों अपने को आप दुखी कर रहे हो। क्यों बोलता है कि इस संसार में सिवाए दुख के कुछ नहीं। दुख कौन पैदा करता है, अरे तू अपने आप पैदा करके फिर बोलता है कि दुख है। ऐ बूक क्यों दुख पैदा करता

हैं? दुख कहाँ है, तू सुख रूप हो जा। सब दुख को छोड़कर सुखरूप शान्त हो जा। फिर देखो कि सुख है या दुख है आपेही खड़ा खोदकर उसमें गिर रहे हो, तुम एसा मूर्ख हो, पीछे बोलता है मैं ऐसा हूँ, ऐसा हूँ। वाह तुम तो बड़े मूर्ख, बेवकूफ हो, खबरदार अब से शान्ति धारण कर लो। दुख जिसमें है उसको छोड़ दो। अच्छा तुम बहादुर होकर काम करता रहो, उसमें लिपायमान मत हो। वह तुम्हारा कुछ नहीं। कुछ भी बात की चिंता या संकल्प विकल्प न करो। कर्म करके फिर चुप हो जाओ। अपना महत्व न रखो। तू कार्य मात्रा कर्म करता रहो और आनन्द में रहो। टाइम ठीक रखो। कोई भी काम निश्चयपूर्वक करो। अल-मस्त के माफिक बेपरवाह रहो। कुछ भी हो जाए कोई भी झंझट न समझो, मौज में रहो, तेरा कुछ नहीं। थोड़ा टाइम कार्य कर लो, बाकी प्रोग्राम बना दो कि क्या करने से आनन्द में मस्त होकर रहूँ। व्यवहार में जास्ती टाइम न दो, और जास्ती बात न करो। दो शब्द में काम खलासा। बाकी टाइम गुरुदेव जी जैसे सत है वैसे तुम भी सत और आनन्द में सत होने का चिंतन करता रहो। मन से बैठ विचार करो और शास्त्र पढ़ो। कोई भी उपाय ढूँढ निकालो जो तुम कर्म भी करता रहो परन्तु निरइच्छा, उल्लास से।

हे मन, तू एक निश्चय करो कि तुमको क्या करना है। तुम शान्तचित होकर रहना चाहते हो तो मन की मूँझ मिटा दो, तू तो दास है, जो कुछ करता है मालिक के लिए। मालिक के हुक्म से करता है। वही कराता है। मैं मर गया, बस आप हो ऐसे बरतता रहो। घड़ी-घड़ी यह ख्याल रखो कि यह दास है। सब उस मालिक का है, जो छीन सकता है, ले सकता है। यह दास बिना प्रभु के हुक्म से क्या कर सकता है। हे नाथ सिवाए आपके हुक्म कुछ हो नहीं सकता। जब तू ऐसी ताकत वाले का दास है तो तुझको क्या परवाह! सत का हूँ, मैं सत वस्तु, जो हूँ तो सब सत का है। असत नाश्वान है।

30-12-32 ओम्

बाहदशाह आत्म - हे भाई वजीर मन, मुझे तुमसे प्राइवेट कान्फ्रेंस करनी है। टाइम सुबह, सवेरे का ठीक होगा।

वजीर मन - साई मैं हाजिर हूँ, परन्तु मैं कुछ दाल में काला देखता हूँ। कुछ समय से आपके रहन-सहन में कुछ फर्क हो गया है। आप मेरे ऊपर दबाव डालने की कोशिश करते रहते हो। खैर मैं हाजिर हूँ। बादशाह आत्मा - ठीक है, कल सुबह को जो होगा सो विचार करेंगे।

दूसरे दिन 31-12-32

बादशाह आत्मा - हे भाई मन, तू मेरा वजीर होकर तुमने बहुत दिन अपना दखल जमाया है। तुम वजीर होकर बादशाह को गफलत में देखकर तूने मेरे अमलदारों को साथ में लेकर, कौन अमलदार तुमने साथ लिए? एक तो स्पेसालार (सबसे बड़ा) काम अमलदार। दूसरा कमिश्नर अमलदार क्रोध को तूने साथ लिया। तीसरा कोतवाल लोभ को, चौथा सिपाही मोह को साथ लिया। पांचवा अमलदार, सूबेदार अहंकार को साथ लेके तुमने बहुत दिन धूमधाम से मेरा राज्य चलाया। मुझे इन अमलदारों की रस्सियों में जकड़के खूब तूने मुझे नाच नचाया। हे भाई वजीर मन तुम हमारी बात तो सुना थोड़ा रोज हुआ तो मैं एक दूसरे बादशाह के पास गया था उसने मुझसे कहा, तू अपने वजीर के हाथ में अंधा होकर गफलत में पड़े हो, उसके अधीन होकर अपने अमलदारों के हाथों से ठोकरें खा रहे हो। तेरा वजीर बड़ा बेईमान दिखता है। जो अमलदारों के साथ मिला हुआ तेरे ऊपर अपना दबाव रखके तेरा राज्य चला रहा है। और तूने अपना जो बड़ा शहनशाह परमात्मा है, जिसने आपको लायक समझके बादशाह बनाके भेज दिया है और हुक्म दिया है कि खबरदार तुम हमको भूल नहीं जाना। अच्छी तरह से राज्य चलाके आओगे और अच्छा फायदा राजधानी में रहकर निकालके मेरे पास आयेगे तो छोटे बादशाह आत्मा से बड़ा बादशाह परमात्मा बना दूँगा।

यानी अपने साथ मिला दूँगा। यानी आत्मा छोटा बादशाह को परमात्मा बड़ा बादशाह से मिला लूँगा। यानी जैसे समुद्र से निकली हुई लहर को अपने साथ फिर समुद्र में मिला लूँगा। और जो ईमानदारी से राज्य नहीं चलायेंगे तो तुमको गिराकर तुम जैसा कर्म करोगे ऐसे नीचे दर्जे के जन्म में फिर तुझको भेज दूँगा।

हे मेरे प्यारे वजीर मन - मैंने तुझसे यह फैसला करने के लिए टाइम मुकरर किया था सो तुम बैठकर शान्त से सुना। आज थोड़े रोज की बात है कि मैं जो तेरा बादशाह हूँ सो कोई दूसरे बादशाह के पास गया, उसको मैंने अपने से बहुत अच्छी हालत में देखा, बहुत आनन्द में देखा। लाख बार आनन्द में देखा, हे मेरे प्यारे मन, मैं तुझसे एकान्त में बैठकर कुछ बातचीत करना चाहता था, यह बातचीत इस किसम की है—

हे मेरे प्यारे मन, तुम एकान्त में बैठकर मेरी बात सुना। मैं थोड़ा रोज़ हुआ तो एक स्थान पर गया था, वहाँ मेरा एक सत पुरुष से मिलाप हुआ, मैं उस पुरुष को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसको देखकर मैं दिल में सोचा कि यह पुरुष कैसा सुखी है। कैसा आनन्द में बैठा है। कैसा साफ, कैसा प्यारा, कैसा शान्त चित यह बहुत ही सत पुरुष दिखता है। क्या है इसमें? है तो मेरे जैसा मनुष्य, फिर यह कैसा आनन्द में शुद्ध बोलता है, शुद्ध रहता है। मैं उसके पास बहुत आनन्द में आ गया।

दूसरे दिन - खास रास्ता

आप कहते हो कि जिनके बन्धन कट जाते हैं उन्हीं को सहज होता है, क्योंकि औरों से मोह निकलकर एक ईश्वर में ही रहता है। क्योंकि बंधन टूट जाते हैं तो फिर मोह का ख्याल उस तरफ नहीं दौड़ता। बाकी व्यवहार भी छोड़ देता है। कुटुम्ब से मोह टूटा तो बंधन खलासा। फिर तो सहज होता है या कुछ न हो तो भी पेट तो सहज मिल जाता है। जो ईश्वर जरूर पहुँचाता है। शरीर के साथ वह खुद जिम्मेवारी उठाता है। बाकी पीछे फुरनों के बंधन कट गये तो बहुत ही सहज है। शान्त होकर बैठना, शान्त रूप होने का है। क्यों मन ऐसा है क्या कि बंधन टूटे? क्यों जिस तरह तुम कोई भी नश्य पूरा रखेगा। तुम समझो कि बंधन तुम्हारे खलास हैं। समझो कोई भी तुम्हारा नहीं है, सभी नारियाँ देवियाँ हैं, सभी नर देव हैं। सब एक हैं। या सोचो मैं तो मर गया हूँ। यानी यह देह नहीं है। यह निश्चय कर लो तो तुम्हारा कुछ नहीं है। मैं हूँ ही नहीं। मैं मर गया। बाकी हे नाथ तू ही तू..... मेरा कुछ नहीं।

भाई पक्का कर लो कि न कोई तुम्हारा न तू किसका। मेरा कुछ नहीं सब तेरा। जो आज मेरा है वह सब हो गया तेरा।

एग्रीमेंट

सब कुछ आपका। यह आपका दास को हुक्म होता है। कर्म तो करना है। यह गुरुदेव का व्यवहार चलाओ तुमको कोई चाहना नहीं है। पेट को भोजन मिलता रहोगा। तेरा कुछ नहीं समझके, सब गुरुदेव का है, समझके व्यवहार चलाओ। देखो क्या होता है? तूने सत को माना और तू भी शान्त होने मांगता है, ठीक है। शान्त में सुख है, आनंद है। जहाँ कोई भी खिटपिट की बात नहीं आती है। कोई व्धव्यवहार की बात नहीं है, सिवाए सत के कोई बात नहीं, वहाँ आनंद शान्त मालूम होता है। अच्छा ऐसा होना सम्भव नहीं है सम्भव है। अच्छा— शान्त होकर आनंद में रहना है तो बहादुर हो जाओ। पहले समझ लो कि मेरा कुछ नहीं, जो कुछ है, जिसका है उसी का है क्यों? अच्छा अब तुम बैठे-बैठे शरीर छोड़ देता है, बताओ फिर तेरा क्या है? चलाओ विचार, जल्दी बताओ। कल फलाना जौहरी बैठा था, अचानक मर गया। बताओ उसका क्या रहा। उसके हाथ में क्या था, क्या रहा? मेरा-मेरा करता फौरन मेरा छूट गया। क्यों कहता था? मैं यह करूँगा, मैं यह करूँगा - बस ख्याल करता-करता शान्त हो गया। फिर साथ में क्या ले गया? शरीर भी रह गया, तेज निकल गया। शरीर तो बेकार था। बाकी तेज जीवात्मा छोटा सा लिंग शरीर धारण करके कर्मों को

पोटरी कर्मों का खाता साथ ले गया, हिसाब-किताब देने के लिए। फिर नफे नुकसान के हिसाब से ऊंच नीचे दर्जे में जन्म लिया।

इसी तरह तू जीते जी बहादुर होके समझ लो, निश्चय कर लो कि जैसा गुरुदेव सत है वहाँ आनन्द के सिवाए और कुछ नहीं, कोई संसारी व्यवहारी झगड़ा नहीं। तू भी जीते जी मन में निश्चय कर ले कोई तेरा नहीं। कुछ भी तेरा नहीं। जो है सो उसी का है। अन्जाम करो, पक्का निश्चय करो मेरा कुछ नहीं, सब तेरा मैं मर गया सब तेरा। जैसे फलाना मर गया सब तेरा, वैसे मैं समझ लेता हूँ मैं नहीं हूँ, यह सब तेरा। नाम मात्र बैठा हूँ, पर समझ लो नहीं हूँ। जाओ मेरा कुछ नहीं। मेरा हो ही नहीं सकता। मैं कहाँ हूँ, निमित्त मात्र देखता रहो। दृढ़ निश्चय रखो कि मेरा कुछ नहीं। जब निश्चय हो जावे मेरा कुछ नहीं तो दुख है ही नहीं। यह पक्की बात है। मेरा कहाँ? जहाँ भी दुख आया, याद रखो कोई भी बात दुख की आवे तो कह दो मेरा कुछ नहीं, तो दुख भाग जायेगा। झंझट भाग जायेगा। फलाना मर गया, अच्छा। कोई मरता नहीं, शरीर का चोला बदल लिया, मरेगा क्या। कोई मरता नहीं, माया चली गई, किसकी माया क्या काम देती है। शरीर चला जाने के बाद माया क्या काम की। और शरीर होते माया क्या काम की। शरीर बीमार होता है, आखिर में मर जाता है या गिर जाता है फिर माया क्या करती? कुछ सहाय नहीं करती। तो फिर शरीर के सिवाए बाकी जो तू है उसको पहचान। वह सत वस्तु आत्मा रोशनी की चमक, सूरज की चमक, समुद्र की एक लहर परमात्मा में यह आत्मा समा जाती है। वही आत्मा तू है, जो परमात्मा में मिल जायेगा। और तू कुछ नहीं है। आत्मा सच चित आनन्द शान्तिचित्त, अलग साफ माया से परे, शरीर से न्यारा.... सबसे यह न्यारा सबसे परे भी और नजदीक भी। जब ध्यान करो तो समझ लो शरीर नहीं है, बाकी जो वस्तु है प्रकाश, शरीर से न्यारा। शरीर से अलग हो जाओ। कुटुम्ब, माया, व्यवहार सबको भूल जाओ। समझ लो मैं नहीं हूँ, पीछे शरीर को भूल जाओ। बाकी सत होकर चुप हो जाओ। सत बोलता है, श्रीकृष्ण भगवान बोलता है सबमें मैं हूँ, सब मेरे में नहीं है। मैं सबमें हूँ। ठीक है कोई मेरे में नहीं है, एकदम ठीक है। मैं सबमें हूँ, मेरे में कोई नहीं है। हे गुरुदेव आप सबमें हैं। आपमें आपको पहचानने वाले सब हैं। रोज़ सुबह को, शाम को सोच लो — श्रीकृष्ण महाराज, सत श्री गीता में कहते हैं सो ख्याल करो। मैं शरीर से न्यारा, सबसे न्यारा, मैं सबमें हूँ। मेरे में मेरे को पहचानने वाले हैं। सोच में पड़ा हूँ। गुरुदेव रास्ता बताओ, रास्ता बताओ। मैं सबमें हूँ जो मेरे को नहीं जानते वे मेरे में नहीं हैं। जो मुझको जानते हैं वे मेरे में हैं। अच्छा समझ लिया। आप सबसे न्यारा हो बैठे हो? फिर आगे क्या रास्ता है? हे गुरुदेव, रास्ता यही आखरीन — अच्छा रोज़ आपको अलग देखूँगा। अच्छा समझ लिया। आप सब गड़बड़ को छोड़कर अलग हो गये हो। अरे हे बेवकूफ मन, देखा। कहाँ की बात कहाँ रहीं। तूने कितनी बड़ी भूल की। अरे भाग जाओ। सब लेकर भाग जाओ। मैं अलग हूँ, अरे तू अपने लश्कर को ले जा। अरे मैं तो सत वस्तु हूँ। अरे तेरे 5 साथी मुझको क्या कर सकते हैं। अरे भाग जा। मैं तो न्यारा सत हूँ, शरीर से मेरा कोई वास्ता नहीं। मैं सत शरीर से न्यारा सत ओन सत, सत हूँ। गुरुदेव सत सबमें सत हैं। खबरदार, सबमें सत है। बाकी सब असत है। अरे बेवकूफ तूने कितना भूल किया। अरे तू सत था, सत है खबरदार। फिर नहीं भूलना।

ओम् शान्ति।